SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

झारखण्ड में सामाजिक आंदोलन के रूप में स्वच्छ भारत मिशन का योगदान

निरज कुमार वर्मा, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय हजारीबाग, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
निरज कुमार वर्मा, शोधार्थी
E-mail : omnirajom3@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 10/10/2025
Revised on : 12/12/2025
Accepted on : 21/12/2025
Overall Similarity : 00% on 13/12/2025

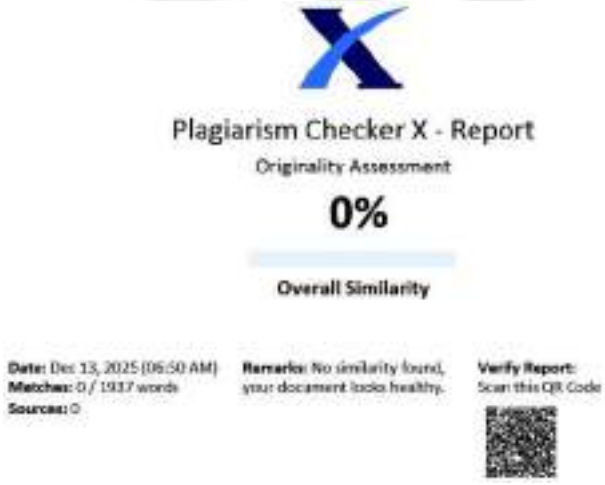

शोध सार

भारत सरकार द्वारा वर्ष 2014 में प्रारंभ किया गया स्वच्छ भारत मिशन न केवल एक विकासात्मक कार्यक्रम था, बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक आंदोलन के रूप में उभरा। इसने स्वच्छता, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक चेतना के क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान की। झारखण्ड जैसे अपेक्षाकृत अविकसित और जनजातीय बहुल राज्य में इस मिशन का विशेष महत्व है क्योंकि खुले में शौच परंपरा, गरीबी, अशिक्षा तथा अवसरंचनात्मक कमी लम्बे समय से सामाजिक स्वास्थ्य समस्याओं का कारण रही है। इस शोध लेख में झारखण्ड में स्वच्छ भारत मिशन के कार्यान्वयन उसकी उपलब्धियों, चुनौतियों और सामाजिक – आर्थिक प्रभावों का अकादमिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। विशेष रूप से इसे एक सामाजिक आंदोलन के रूप में देखा गया है जिसने समाज के विभिन्न वर्गों को जागरूक और सक्रिय किया। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि किस प्रकार (SBM) ने सामाजिक चेतना, महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य, सुधार और पर्यावरणीय संतुलन में योगदान किया तथा इसे स्थायी बनाने के लिए किन बिन्दुओं पर और ध्यान देने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द

सामाजिक आंदोलन, महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य, स्वच्छता.

प्रस्तावना

स्वच्छता किसी भी राष्ट्र की सभ्यता और संस्कृति का दर्पण होता है। यह केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य या परिवार तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरे समाज की जीवनशैली और सोच को प्रतिबिंबित करता है। भारत जैसे विशाल और जनसंख्या बहुल देश में स्वच्छता हमेशा से एक गंभीर चुनौती रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में खुले में

शौच की प्रथा, शहरी इलाकों में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की समस्या, जल स्त्रोतों का प्रदुषण और आम नागरिकों में जागरूकता की कमी ने देश के सामाजिक व आर्थिक विकास को गहरा आघात पहुँचाया है। इन परिस्थितियों को बदलने और भारत को स्वच्छता की दिशा में एक नए युग में ले जाने के लिए भारत सरकार ने 02 अक्टुबर 2014 को महात्मा गाँधी के जयंती पर स्वच्छ भारत मिशन की शुरूआत किया।

प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता में भी नगर योजना के अतिसावधानीपूर्वक स्वच्छता प्रणालियों का सर्तकतापूर्वक एकीकरण करके स्वच्छता को प्राथमिक महत्व प्रदान किया गया था। 19 वीं शताब्दी के दौरान यूरोप के औद्यागिक नगरों में व्याप्त अस्वास्थ्कारों परिस्थितियों को अनेक व्यक्तियों ने इंगित किया है।

आजादी के 67 साल बाद भी 2014 में भारत में लगभग 10 करोड़ ग्रामीण और लगभग एक करोड़ शहरी परिवारों के पास शौचालय नहीं था। भारत की आधी आबादी लगभग 55 करोड़ खुले में शौच करते थे।

महात्मा गाँधी स्वंय स्वच्छता को स्वतंत्रता से अधिक महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने अपने जीवनकाल में बार –बार इस बात पर जोर दिया कि स्वच्छता केवल एक आदत नही, बल्कि एक सांस्कृतिक मूल्य है। इसी प्रेरणा को आधार बनाकर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इस मिशन की नींव रखी। इसका मुख्य उद्देश्य भारत को खुले में शौच मुक्त (ODF) बनाना, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में साफ–सफाई को जीवनशैली का हिस्सा बनाना, ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन को सुदृढ़ करना और नागरिकों में स्वच्छता के प्रति जिम्मेदारी की भावना को जागृत करना।

इस मिशन के तहत सामाजिक गरिमा, विशेषकर महिलाओं और बालिकाओं की सुरक्षा और सम्मान से सीधे जुड़ा हुआ है। वर्ष 2014 में झारखण्ड के ग्रामीण शौचालय कवरेज के 16 प्रतिशत था। स्वच्छ भारत मिशन के बाद राज्य में 35 लाख से अधिक घरेलू शौचालय बनाये गये। झारखण्ड में कुल 29322 गाँवों में से 26666 ग्राम (ODF Plus) घोषित किये गए जिसमें मॉडल ग्रामों की संख्या 7702 है। राँची और गिरिडीह जैसे जिलों में सामुदायिक भागीदारी से शौचालय उपयोग बढ़ा है।

स्वचछ सर्वेक्षण 2024–2025 में बुण्डु को झारखण्ड का सबसे स्वच्छ शहर घोषित किया गया, जबकि जमशेदपुर ने देश में तीसरा स्थान प्राप्त किया।

स्वच्छ भारत मिशन (2014) से पहले ग्रामीण और शहरी भारत की लाखों महिलाओं को शौचालय की अनुपलब्धता के कारण अनेक गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ता था।

1. **खुले में शौच की मजबुरी**: अधिकांश ग्रामीण घरों में शौचालय नहीं होते थे, जिसके कारण महिलाओं को खेत, जंगल या नदी –नालों के किनारे शौच करना पड़ता था। दिन में खुले में जाना असुरक्षित और शर्मनाक समझ जाता था, इसलिए महिलाएँ प्रायः अंधेरे (सुबह जल्दी या देर रात में जाती थी)।
2. **सुरक्षा सबंधी खतरे**: खुले में शौच करने के दौरान छेड़छाड़, उत्पीड़न या हमले का डर बना रहता था। गाँव या शहर की झुग्गी–बस्तियों में महिलाओं की सुरक्षा और गोपनीयता एक बड़ी समस्या थी।
3. **स्वास्थ्य सबंधी समस्याएँ**: समय पर शौच न कर पाने से पेट और आंत सबंधी बिमारियाँ (कब्ज, मुत्र संक्रमण, दस्त आदि) आम थी। गंदगी और खुले में मल त्याग के कारण जलजनित रोग (डायरिया, हैजा, टाइफाइड) फैलते थे। गर्भवती महिलाओं और वृद्ध महिलाओं को अतिरिक्त कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था।
4. **सामाजिक असुविधा और अपमान**: महिलाओ को शौच के समय गोपनीयता नहीं मिलती थी, जिससे उन्हें मानसिक तनाव और शर्मिंदगी उठानी पड़ती थी। सामाजिक वर्जनाओं के कारण कई महिलाएँ पुरे दिन पानी कम पीती थी ताकि बार –बार शौच न जाना पडे। इससे डिहाइड्रेशन और अन्य बीमारियाँ हो जाती थी।
5. **शिक्षा और कार्य में बाधा**: विद्यालयों में शौचालय न होने से किशोरियों की शिक्षा प्रभावित होती थी, विशेषकर मासिक धर्म के दौरान कामकाजी महिलाओं को कार्यस्थल पर भी यह समस्या झेलनी पड़ती थी।

सामाजिक आंदोलन के रूप में स्वच्छ भारत मिशन का योगदान

स्वच्छ भारत मिशन ने भारत के अधिकांश राज्यों में न केवल स्वच्छता के स्तर को बढ़ाया है, बल्कि इसे एक सामाजिक आंदोलन के रूप में भी स्थापित किया है।

झारखण्ड जो ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों से युक्त राज्य है, इस आंदोलन का एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। यहाँ स्वच्छता केवल सरकारी नीति तक सीमित नहीं रही, बल्कि स्थानीय समुदाय, पंचायतें, स्वंयसेवी संगठन और आम नागरिक इसे जीवन का हिस्सा बनाने में सक्रिय हुए हैं।

- **ग्रामीण क्षेत्रों में योगदानः** झारखण्ड के गाँवों में खुले में शौच प्रथा आम थे, जो स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक गरिमा के लिए चुनौतिपुर्ण थे। स्वच्छ भारत मिशन के तहत शौचालय निर्माण और व्यवहार परिवर्तन कार्यक्रमों ने ग्रामीण निवासियों को स्वच्छता के महत्व से अवगत कराया। पंचायत स्तर पर ''स्वच्छता समिति'' के गठन ने ग्रामीणों को निर्णय प्रक्रिया में भाग लेने और जिम्मेदारी लेने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार मिशन ने स्वच्छता को समाजिक जिम्मेदारी और सामुदाय आधारित आंदोलन के रूप में विकसित किया।
- **शिक्षा और बालिका सशक्तिकरण में योगदानः** झारखण्ड में स्कूलों और आंगनबाडियाँ में शौचालय निर्माण ने विशेष रूप से लडकियों के शिक्षा में सुधार किया। सुरक्षित और स्वच्छ शौचालय में उपलब्ध होने से बालिकाओं की स्कूल उपस्थिति बढी और dropout दर में कमी आयी। यह पहल केवल शारीरिक स्वास्थ्य तक सीमित नहीं बल्कि सामाजिक समानता और बालिका सशक्तिकरण के लिए भी महत्वपूर्ण रही।
- **रोजगार और समाजिक सहभागिताः** स्वच्छ भारत मिशन ने झारखण्ड में रोजगार सृजन में भी योगदान दिया। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में सफाई, शौचालय निर्माण, कचरा प्रबंधन और पुनर्चक्रण जैसी गतिविधियों से स्थानीय लोगों को रोजगार मिला साथ ही स्वंयसेवी संगठनों और युवा समूहों की भागीदारी ने मिशन को सामाजिक आंदोलन का स्वरूप दिया। ग्रामीण समुदाय ने स्थानीय स्तर पर जागरूकता अभियान चलाये, सफाई अभियान में भाग लिया और जन सहभागिता बढ़ाई।
- **स्वास्थ्य और सामाजिक चेतनाः** स्वच्छ भारत मिशन ने झारखण्ड के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य में सुधार किया। जल जनित रोगों में कमी आयी और सार्वजनिक स्वास्थ्य के प्रति सामाजिक चेतना बढ़ी। लोग अब स्वच्छता को केवल निजी जिम्मेदारी नहीं मानते, बल्कि इसे समुदाय और समाज की जिम्मेदारी के रूप में अपनाने लगे।
- **सांस्कृतिक और पर्यावरणीय प्रभावः** मिशन ने लोगों की मानसिकता और व्यवयहार में स्थायी परिवर्तन लाने का प्रयास किया। कचरा प्रबंधन, प्लास्टिक उपयोग में कमी, और स्वच्छ नालियों व सार्वजनिक स्थलों की सफाई जैसी गतिविधियाँ स्थानीय संस्कृति और जीवनशैली में समाहित हुई। इस तरह स्वच्छ भारत मिशन ने झारखण्ड में स्वच्छता को सामाजिक और समुदाय की पहचान के रूप में स्थापित किया। भारत में सदियों से स्वच्छता से सबंधित परंपराएँ और धार्मिक मान्ताएँ रही हैं। अनेक धार्मिक ग्रंथों में ''स्वच्छता'' को ''ईश्वर की उपासना'' के समान माना गया है, किन्तु आधुनिक समय में जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण और असंगठित जीवनशैली के कारण यह सांस्कृतिक मूल्य कहीं न कहीं कमजोर हो गये थे। स्वच्छ भारत मिशन ने इस पांरपरिक मूल्य को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभाई।
- **व्यवहार में परिवर्तनः** मिशन के तहत जनजागरूकता अभियान चलाए गए, जिनमें नुक्कड़ नाटक, लोकगीत, चित्रकला प्रतियोगिता, स्कूलों में स्वच्छता शपथ और सामुदायिक बैठकों के माध्यम से लोगों को स्वच्छता के प्रति संवेदनशील बनाया गया। इससे लोगों की सोच में परिवर्तन आया और स्वच्छता को सामाजिक सम्मान से जोड़ने की परंपरा फिर से सुदृढ़ हुई।
- **धार्मिक स्थलों पर स्वच्छताः** मंदिरों, मस्जिदों गुरूद्वारों और चर्चो जैसे धार्मिक स्थलों पर स्वच्छता को प्राथमिकता दी गई। तीर्थ स्थलों के आसपास सफाई व्यवस्था बेहतर हुई, जिससे श्रद्धालुओं में सकारात्मक सांस्कृतिक संदेश गया।

- **जातिगत भेदभाव में कमी:** पहले शौचालय सफाई और गंदगी से जुड़ी गतिविधियों को कुछ जातियों तक सीमित माना जाता था। स्वच्छ भारत मिशन ने इस सोच को चुनौती दी। सभी नागरिकों की सफाई अभियान मे शामिल कर ''स्वच्छता सबकी जिम्मेदारी है'' का भाव मजबूत हुआ। इससे सामाजिक समरसता में वृद्धि हुई।
- **पर्यावरणीय प्रभाव:** स्वच्छ भारत मिशन ने न केवल सांस्कृतिक पुनर्जागरण किया, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **खुले में शौच की कमी:** खुले में शौच से जल स्तरों भूमि और वायु में प्रदूषण फैलता था। शौचालय निर्माण और उपयोग को बढावा देकर इस प्रदूषण को काफी हद तक नियंत्रित किया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल स्त्रोत की स्वच्छता में सुधार हुआ और जलजनित बिमारियों में कमी आयी।
- **ठोस अपशिष्ट प्रबंधन:** मिशन के अंतर्गत घर–घर कचरा संग्रहन, कचरे का पृथकरण (गीला और सुखा), पुन चर्क्रण एवं कंपोस्टिंग को बढावा दिया गया। इससे न केवल कचरे की मात्रा कम हुई, बल्कि पर्यावरणीय दबाव भी घटा। प्लास्टिक कचरे के उपयोग में कमी लाने के लिए भी अभियान चलाए गये।
- **स्वच्छ वायु स्वच्छ जल:** स्वच्छता अभियानों से नालों और जल स्त्रोंतो में गंदगी फेंकने की प्रवृति में कमी आयी, जिससे जल की गुणवता में सुधार हुआ। खुले में कचरा जलाने की घटनाओं में कमी से वायु प्रदुषण भी कुछ हद तक घटा।

निष्कर्ष

झारखण्ड में स्वच्छ भारत मिशन ने केवल स्वच्छता स्तर बढ़ाया ही नही, बल्कि इसे सामाजिक आंदोलन के रूप में विकसित किया। इसने नागरिकों की जागरूकता बालिका सशक्तिकरण, रोजगार, स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। पंचायत, स्वयंसेवी संगठन और समुदाय की सक्रिय भागीदारी ने मिशन को केवल सरकारी योजना से आगे बढ़ाकर जन आंदोलन का रूप दिया। इस प्रकार झारखण्ड में स्वच्छ भारत मिशन का योगदान सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से परिवर्तनकारी और दुरगामी साबित हुआ है।

संदर्भ सूची

1. ASER Report 2013 – "Lack of toilets in schools is one of the major reasons for dropout of adolescent girls."
2. भारत सरकार, पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय। स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) – वार्षिक रिपोर्ट 2020–21
3. भारत सरकार, आवास एवं शहरी कार्य मंत्रालय, A Swachh Bharat Mission (Urban) Guidelines (2014)
4. Chakrabarty, B. (2006) Social and Political Thought of Mahatma Gandhi, Routledge, New York.
5. Ministry of Drinking Water and Sanitation (MoDWS) (2014) Swachh Bharat Mission Guidelines, Government of India, New Delhi.
6. Ministry of Drinking Water and Sanitation, Government of India Report (2012) Nearly 60% of rural households did not have access to toilets, Government of India, New Delhi.
7. Ministry of Housing and Urban Affairs (MoHUA) (2017) Swachh Bharat Mission (Urban) Guidelines. Government of India, New Delhi.
8. Planning Commission (2011) Approach to the Twelfth Five Year Plan (2012–17) Government of India, New Delhi.
9. Planning Commission of India (2015) Environmental Impacts of Sanitation Campaigns, Government of India, New Delhi.

10. राष्ट्रीय स्वच्छता पोर्टल, https://swachhbharatmission.gov.in, Accessed on 05/10/2025.

11. UNDP (2020) Sustainable Development Goals Report, United Nations Development Programme, United Nation development program (UNDP) ADDRESS -one United Nation plaza, New York.

12. UNICEF & WHO (2019) Progress on Household Drinking Water, Sanitation and Hygiene 2000–2017, World health organisation and United Nation childrensfund, Geneva.

13. WHO (2018) Sanitation and Health, World Health Organization, Geneva.

14. World Health Organization (WHO), 2014 Inadequate sanitation causes major health issues especially among women and children, Geneva.

****